ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 26 अंकः 06 बुलेटिन अवधिः 21–25 जनवरी **2017 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 20** जनवरी**, 2017**

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर**				
	21–01–2017	**22–01–2017**	**23–01–2017**	**24–01–2017**	**25–01–2017**
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	22	21	21	20	19
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	06	07	07	07	06
बादल आच्छादन	बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	90	90	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	50	55	55	50	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	08	08	08	06	06
वायु की दिशा	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (13 से 19 जनवरी 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में बादल छाये रहे तथा 0.0 मिमी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 14.0 से 21.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 2.8 से 9.3 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 92 से 97 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 39 से 80 प्रतिशत एवं हवा 1.7 से 6.4 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम व पश्चिम– दक्षिण–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ गेहूँ की फसल मे पीला रतवा रोग का प्रकोप दिखाई पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ चना व मसूर की फसल मे आवश्यकतानुसार एक सिंचाई फूल आने से पहले तथा दूसरी फली बनते समय करे।
- ❖ चना व मसूर की फसल मे फूल बनते समय 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का पर्णीय छिड़काव करे। प्रथम छिड़काव के 10–15 दिन बाद दूसरा छिड़काव करे। प्रति हैक्टर 600–700 लीटर पानी का प्रयोग करे।
- ❖ फिनोक्साप्राप तथा क्लोडीनाफांप के साथ 2–4 डी या मेट सल्फ्यूरॉन मिथाइल को साथ नहीं मिलाया जा सकता है। इनके छिड़काव में कम से कम एक सप्ताह का अंतर होना चाहिए।
- ❖ अगर गेहूँ में केवल चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों का ही बहुलता हो तो नवम्बर में बोई गई गेहूँ की फसल में 34–40 दिन बाद तथा दिसम्बर में बोई समय में बुवाई के 40–45 दिन बाद 2,4–डी0 के 500 ग्राम सक्रिय अवयव या मैटसल्फूरान मिथाईल के 4 ग्राम या कारफेप्ट्राजान के 20 ग्राम का 500–600 लीटर पानी में घोल कर फ्लैट–फेन नोजल द्वारा छिड़काव प्रति हैक्टर की दर से करें।
- ❖ अगर गेहूँ में सकरी पत्ती वाले खरपतवारों की बहुलता हो तो बुवाई के 30–35 दिन बाद फिनोक्साडेन 40–45 ग्राम या सल्फोसल्फूरान के 25 ग्राम या क्लोडिनाफाप के 60 ग्राम या फिनोक्साप्राप इथाइल के 100–120 ग्राम/हैक्टर का छिड़काव करें।
- ❖ अगर गेहूँ में चौड़ी पत्ती वाले एवं सकरी पत्ती वाले खरपतवारों का मिश्रित प्रकोप हो तो सल्फोसल्फ्यूरान+ मेटसल्फ्यूरान (30+2) के 32 ग्राम का छिड़काव 500–600 लीटर पानी में घोलकर बुवाई से 25–30 दिन में करें।
- ❖ मैंथा की अगेती बुवाई शुरू करे।
- ❖ मैंथा की उन्नतशील किस्मों– कोशी, सक्षम, कुशल, हिमालय, सरयू सिम क्रान्ति आदि का चुनाव करें।
- ❖ बुवाई से पूर्व मैंथा की जड़ो को 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर पानी में तैयार घोल में 5 मिनट तक डुबाए। इसके बाद जड़ो को घोल से निकाल कर इसे आधा घंटा तक छाया में सुखाए। इसके उपरान्त ही वुबाई करें।
- ❖ खेत में 25–30 टन सड़ी गोबर का खाद खेत मे बुवाई से 10–15 दिन पूर्व मिलाए। बुवाई के समय 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 80 किलोग्राम फास्फोरस, 60 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हैक्टेयर प्रयोग करें।
- ❖ सरसों में चित्रित बग के नियत्रण हेतु डाई क्लोरवॉस 76 ई0सी0 का 627 मिली/हेक्टेयश्र की दर से छिड़काव करे।
- ❖ सरसों में माहुं का प्रकोप होने पर थियामेथोक्जाम 25 डब्लूएसजी 50–100 ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे। इसकी प्रतीक्षा अवधि 21 दिन है।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ बड़े पौधो जैसे आम और लीची में सिचाई न करे। परन्तु छोटे पौधो को पाल से बचाने हेतु आवश्यक्तानुसार सिंचाई करे।
- ❖ फल पेड़ की आयु के अनुसार 100 ग्राम नाइट्रोजन प्रति वर्ष पेड़ के हिसाब से 10 वर्ष तक बढाते रहे। 10 वर्ष के पश्चात् एक किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति पेड़ दें। 10 वर्ष या अधिक आयु के पेड़ के लिए इस प्रकार 2–2 किलोग्राम यूरिया आवश्यक होगी।
- ❖ करी कीट के नियंत्रण हेतु पालीथीन स्ट्रिप का प्रयोग करें ताकि इन कीटों को पौधों के ऊपर चढ़ने से रोका जा सके। इसके लिए 25 से 30 सेमी चौड़ी पालीथीन लेकर पौधों के मुख्य तना पर जमीन की सतह से लगभग 30–40 सेमी ऊपर पौधों के तनों के चारों ओर से लपेट दें। लपेटने के उपरान्त पालीथीन की निचली तथा ऊपरी सतह पर ग्रीस या खराब तेल का प्रयोग करते हुए पालीथीन के दोनों शिरों को रस्सी से बांध दें।
- ❖ फल पेड़ के तने पर करी कीट के नियंत्रण हेतु 250 ग्राम फोलीडाल के 2 प्रतिशत चूर्ण या 250 ग्राम क्लोरपाइरीफास डस्ट प्रति पेड़ के तने एवं उसके पास की मृदा पर डस्टर द्वारा बुरके।
- ❖ टमाटर एवं आलू में पछेती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 का 2.5 ग्राम/ली0 की दर से छिड़काव करे।
- ❖ मटर में रतवा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 का 2.5 ग्राम/ली0 या प्रोपीकोनाजोल 1 मि0ली0/ली0 की दर से छिड़काव करे।

❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।

❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।

❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।

❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।

❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।

❖ प्याज में थ्रिप्स के नियंत्रण के लिए लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद तथा पर्पिल ब्लॉच के नियंत्रण हेतु डिफेनोकोनाजोल 25इसी 0.1प्रतिशत या कीटाजीन 48 इसी 0.2 प्रतिशत का छिड़काव के 20 दिन बाद फल का उपयोग करें।

पशुपालन प्रबन्धः

❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें।

❖ पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।

❖ पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।

❖ इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।

❖ जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।

❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्‌टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्‌टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।

❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

❖ मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोशिस हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पशुचिकितसक की सलाह से दवा दें।

❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर